पद २

(राग: भैरवी - ताल: पंजाबी)

मज हें संत दयेचें देणें। मज हें साधुदयेचे देणें।।धु.।। सत्स्वरूपी सहपंचभूत मी। जग मिथ्या अनुभवणें।।१।। तुच्छ अनिर्वचनीय ही माया। स्वरूपीं असंभव पाहाणें। नामरूपमल वस्त्रां फेडुनी। आकाशाचें घेणें।।२।। स्वानुभवें जाणिव गाळुनी निजवस्तूचे घेणें।।३।। ज्ञानरूप मार्तांड प्रतापें। स्वरूपी स्वरूपच पहाणें।।४।। मज हे श्रीगुरु घरीचें देणें।।धु.।।